P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

कलाल समाज के आराध्य–'श्री हैययनाथ सहस्रबाहु अर्जुन'

ललित कुमार मेवाड़ा
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
रतनलाल कंवरलाल पाटनी
राजकीय महाविद्यालय,
किशनगढ़, अजमेर,
राजस्थान, भारत

मानक जैन
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

श्री हैययनाथ सहस्रबाहु अर्जुन को कलाल समाज का आराध्य माना जाता है। इनके पिता कृतवीर्य और माता पद्मिनी थी। इनका वंश चन्द्रवंश माना जाता है। जिसमें भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। इन्होंने अपने गुरु दत्तात्रेय की कृपा से अनेक शक्तियाँ प्राप्त की तथा सम्पूर्ण पृथ्वी को विजित किया। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया और विशाल सम्राज्य की स्थापना की। इन्हें ईश्वरीय गुणों के कारण भगवान सहस्रार्जुन कहा जाता है। ये महान् प्रजापालक, न्यायप्रिय और विद्वान शासक थे, इनके राज्य में ज्ञान विज्ञान की प्रगति हुई। कृषि और सिंचाई का विकास हुआ। ये माहिश्मति के शासक थे इनके साम्राज्य में कोई रोगी, चोर, उपद्रवी नहीं था, सर्वत्र धर्मपालन किया जाता था। इनके द्वारा महाबली रावण को परास्त करने का उल्लेख मिलता है। परशुराम से सहस्रबाहु का भंयकर युद्ध हुआ और भगवान शंकर के अस्त्रों के वार से नश्वर देह का त्याग किया। इन्दौर और देश के अन्य भागों में सहस्रबाहु के अनेक मंदिर स्थित हैं।

मुख्य शब्द : चंद्रवंश, सहस्रबाहु, कृतवीर्य, संकष्ठी चतुर्थी, कलाल जाति, आराध्य, कुलगुरू, दत्तात्रेय, न्यायप्रिय, अत्रि गोत्रोत्पन्न, भार्गव, परशुराम, महावीर्यवान, सहस्रबाहु–सहस्रनाम, माहिश्मति, यदुवंश, हैयय, सुदर्शनचक्रावतार।

प्रस्तावना

चंद्रवंश में अनेकों प्रसिद्ध राजा महाराजा हुए हैं, त्रेता युग में इसी वंश में महान चक्रवर्ती सम्राट राजा राजेश्वर विष्णु अवतार भगवान सहस्रार्जुन का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम कृतवीर्य तथा माता का नाम पद्मिनी था। इसी चन्द्रवंश में भगवान श्री कृष्ण एवं भगवान बलराम का भी जन्म हुआ था। महाराजा कृतवीर्य की पत्नी महारानी पद्मिनी संकष्ठी चतुर्थी का कठोर व्रत रखती थी। उन्होंने सती अनुसूईया के बताये मार्ग अनुसार एकादशी व्रत किया तथा महाराज कृतवीर्य ने भगवान विष्णु की तपस्या की जिसके पश्चात् भगवान विष्णु ने पुत्र रत्न का आशीर्वाद देकर स्वयं अवतार लिया। पुराणों में सहस्रार्जुन को विष्णु अंश सुदर्शन चक्रावतार कहा गया है। उनका अवतार तत्कालीन धार्मिक दुर्व्यवस्थाओं तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा दुष्ट प्रवृत्तियों का विनाश करने हेतु हुआ था। स्मृति पुराण अनुसार कार्तिक मास शुक्लपक्ष सप्तमी रविवार के दिन श्रावण नक्षत्र में जब सूर्य उदय हो रहा था। ऐसे शुभमुहुर्त में भगवान सहस्रार्जुन, कार्तवीर्यार्जुन, सहस्रबाहु, हैहयनाथ, हैहयाधिपति, राजराजेश्वर आदि नामों से जाना जाता है। हैयय वंश को सोमवंश, चन्द्रवंश, कल्यपाल, चेदि, कलचुरि नामों से भी जाना जाता है। ''सहस्रार्जुन भगवान के बारे में ऋषि नारद जी कहते हैं कि दान, यज्ञ, विनम्रता, विद्या में कोई भी राजा कर्तवर्यर्जुन की बराबरी नहीं कर सकता है। विष्णु पुराण के अनुसार भगवान होने के सभी छः गुण सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य इनमें विद्यमान थे। इनका आविर्भाव समाज को सुधार ने के लिए हुआ था।''[1]

अध्ययन का उद्देश्य

कलाल जाति के आराध्य श्री सहस्रबाहु अर्जुन के संपूर्ण जीवनवृत्त, समाज के प्रतिस्थापन, संपूर्ण पृथ्वी विजय, जनहित कार्य, अत्याचारों का अन्त करके कुशल–समृद्ध शासन की स्थापना आदि की व्याख्या के द्वारा कलाल समाज को इनके ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराने हेतु यह शोधपत्र प्रस्तुत है।

विषय विस्तार

''राज्य शासन संभालने के पूर्व कार्तवीर्यार्जुन ने कुलगुरू गर्गमुनि के कहने पर भगवान दत्तात्रेय की कठोर तपस्या की। इस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान दत्तात्रेय ने उन्हें अनेक वरदान दिये, जिनमें चार प्रमुख थे– मत्स्यपुराण के अनुसार पहला वरदान युद्ध भूमि में मेरे सहस्र भुजाएँ हो जाए, दूसरा किसी को सताने व अधर्मी को दण्ड देने का अधिकार, तीसरा सम्पूर्ण पृथ्वी पर युद्ध

द्वारा विजयी, चौथा संग्राम भूमि में अपने शक्तिशाली एवं उत्तम व्यक्ति के हाथों मारा जाऊँ, वरदान माँगे। इन वरदानों को अंगीकृत करते हुए भगवान सहस्रार्जुन ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर विजय प्राप्त की।''2 सभी द्वीपों एवं महाद्वीपों पर अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान कर सर्वत्र अपना राज्य स्थापित किया। मार्कण्डेय महापुराण में महामुनि अंगीरा ने कहा है कि कोई राजा न इनके समान हुआ है और न यज्ञ, दान, तपस्या व संग्राम विजय में इनके समान होगा। भगवान सहस्रार्जुन ने हजारों वर्षों तक समस्त पृथ्वी पर शासन किया। पुराणों में इन्हें राजराजेश्वर कीउपाधि से विभूषित किया गया है। इन सभी के प्रति प्रेम रखते हुए सद्भावना एवं धर्मपूर्वक अपनी सारी प्रजा का पालन एवं रक्षा करते थे। इन्होंने धनुष बल से पृथ्वी पर विजय पाई थी। ये अपार वैभव समृद्धि, ऐश्वर्य और ख्याति प्राप्त कर राजशक्ति के उच्चतम शिखर पर पहुँच गये थे। पुराणों में कहा गया है कि न्यायी, तपस्वी, अतुलदानी, यज्ञकर्ता, प्रजापालक, पांडित्य, वीरता में इनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। इनके शासनकाल में लोगों का धन नष्ट नहीं होता था। विज्ञान चरम उन्नति पर था। ये जब चाहे जितनी वर्षा करा लेते थे। इन्होंने दत्तात्रेय से योग विद्या भी सीखी थी। प्रजा सुखी थी। कृषि उपज अपार होता था। कृषि उपज बढ़ाने के लिए पर्वतों के तलहटी तथा जंगलों के भूमि को समतल कराकर जनता को समर्पित किया था। सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण कराया था।

श्री सहस्रार्जुन की महिमा का वर्णन 'श्री सहस्रार्जुन स्तोत्र' में निम्न श्लोकों में किया गया है :–

यं प्रासूत जगत् प्रसिद्ध पद्मादेवी गुणाढ्यं सुतम्।
रक्षायैनिजदेश मानवगणस्यानन्दवृष्टिप्रदम्।।
दत्तात्रेयगुरोर्गृहीत महिमा रक्षार्थं मुदयुक्तवान्।
अत्रेर्गोत्रजनुः सकीर्तिपहितः पायात् सहस्रार्जुनः।।[3]

भावार्थ

जगत् प्रसिद्ध श्री सहस्रार्जुन जिन्हें श्रीमती माता पद्मिनी ने पृथ्वी की रक्षा के निमित्त अपने गर्भ में धारण किया; जो कि महर्षि दत्तात्रेय से क्षात्र धर्म की दीक्षा लेकर दुष्टों का संहार करके समस्त मानव जाति का कल्याण करने वाले हैं, वही अत्रि गोत्रोत्पन्न भगवान सहस्रार्जुन हमारी रक्षा करें।

यत्कीर्ति महिमानमुच्चचरितं संकीर्तयन्त्यागमाः।
यस्योत्कृष्ट चरित्रं चित्रणविधौश्रीमानगस्त्यः प्रभुः।।
यन्माहात्म्यमिमे च नारदमुखा गन्धर्व मुख्याद्यपि।
गायं गायमति प्रफुल्लमनसा नित्यं प्रसीदन्तिते।।[4]

जिनकी महान् महिमा का यशोगान पंचम वेद समग्र पुराण आदि ग्रन्थ करते नहीं थकते, जिनके अत्युज निर्मल चरित्र को श्रीमान् महर्षि अगस्त्य, महात्मा नारद आदि गन्धर्वजन निज मुख से गायन करके नित्य प्रसन्न हुआ करते हैं।

उपरोक्त श्लोकों एवं कई और श्लोकों के अनुसार भगवान सहस्रार्जुन के गुण गरिमा का महत्वपूर्ण उल्लेख 'श्री सहस्रार्जुन स्तोत्र' में किया गया है, इसे दत्तचित्त होकर श्रवण मनन करने पर ही उसकी जानकारी हो सकती है। श्री सहस्रार्जुन का मूल नाम अर्जुन था। राजा कृतवीर्य के पुत्र होने के नाते उन्हें सर्वत्र कार्तवीर्यार्जुन कहा गया है।

उस समय की संकट कालीन परिस्थितियों में भार्गवों के बीच फैले हुए महान् लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, पक्षपात एवं भ्रष्टाचार आदि दुर्गुणों का अन्त करने के लिए इस धराधाम की पवित्र भारतभूमि पर सुदर्शन चक्रावतार के रूप में कृतवीर्य नरेश के यहाँ भगवान सहस्रार्जुन उत्पन्न हुए। हमारे इस अटल विश्वास की पुष्टि श्री सहस्रार्जुन कार्त्तवीर्य गायत्री मंत्र से होती है यथाः–

ऊँ कार्त्तवीर्यायविद्महे महावीर्याय
धीमहि तन्नोऽर्जुनः प्रचोदयात्।[5]

भावार्थ

हे! प्रजापालक, सर्वत्र रक्षक राजन्य! हम आपके उस परम तेजपुंज दुःखनाशक स्वरूप को बारम्बार नमस्कार करते हैं। हे, महावीर्यवान श्रीकृतवीर्य नन्दन सहस्रार्जुन ! हमारी बुद्धि को सत्य की ओर प्रेरित करें।

कार्तवीर्यार्जुनोदेवः राजराजेश्वरी विभुः।
हन्तादैवदुःखस्य लब्ध कीर्तिश्च सर्वतः।।
धर्मकर्त्ता प्रवक्ता च उरुव्ययाः दुःखविनाशकः।
माहिष्मतीपुराऽधीश हैहयवंश समुद्भवः।।[6]

जिस प्रकार से सम्पूर्ण भारतवर्ष में भगवान शिव, श्री विष्णु सहस्रनाम एवं श्री गोपाल सहस्रनाम का पूजा पाठ होता है, उसी भांति श्री कार्तवीर्यं सहस्रार्जुन के भक्तों द्वारा भी श्री सहस्रार्जुन के सहस्रनाम का सर्वत्र पूजा पाठ जाप होता है। राजा कृतवीर्य त्रेतायुग में हैयय जनपद के अन्तर्गत इतिहास प्रसिद्ध माहिष्मतीपुरी के स्वामी थे, जिनके अधीन कई छोटे बड़े राजा भी थे। इनके राज्य में कोई शत्रु नहीं था। किसी को रोग नहीं होता था। वहाँ चोर आदि का उपद्रव नहीं होता था। किसी भी प्रकार से जनता को कष्ट नहीं था। सब जगह सर्वदा धर्म का ही पालन किया जाता था। कहा जाता है कि राजा कृतवीर्य के कई एक रानियाँ थी और वहाँ जंघा चरण विद्या के कई महान् विद्वान भी थे।

1. कृतयोनो वपतेह बींज।[7]
2. कृतमुपार्जिते वीर्यं येन बहु ब्री.।[8]

यदुवंश, और हैयय वंश को पुराण इतिहासकार भिन्न नहीं मानते, उन्होंने राजा कृतवीर्य को कनकात्मज यदुवंशी क्षत्रिय बतलाया है–

चन्द्रस्ययादवे वंशे हैहय क्षत्रिय मताः।
तेषामेव कुले जातः कार्तवीर्याजुनो नृपः।।[9]

भावार्थ

चन्द्रवंशी यादव कुल में हैयय वंशी क्षत्रिय हुए और इसी कुल में भी कार्तवीर्य अर्जुन नाम के प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजा हुए।

ऋषिवंशी द्वितीयस्तु शशांक निर्मलः।[10]

भावार्थ

चन्द्रवंश को चन्द्रमा की किरणों के समान निर्मल कहा है। चन्द्रवंश की प्रधान द्वितीय शाखा यदुवंश की कुछ पीढ़ियों के पश्चात् ही तीसरी शाखा का नाम हैयय वंश कहा है। हैयय वंश के चलाने वाले शतजित के पुत्र अपने जमाने के एकमात्र वीर पुरुष महात्मा हैयय एक वीर थे। इनकी महान् पवित्र कथा श्रीमद् देवी भागवत महापुराण के छठे से सप्तम स्कन्ध में विशद विवरण सहित वर्णित है। जिसमें महात्मा हैयय एक वीर को विष्णु का अंशावतार कहा गया है। आगे चलकर इसी महान् प्रतापी हैहय वंश में पाँच प्रसिद्ध कुल चले, जिनका उल्लेख अधोलिखित श्लोक में मिलता है।

जयध्वजात्तालजंघास्तालजंघात्ततः सुताः।
हैहयानां कुलाः पंचभोजाश्चावन्तयस्तथा।।
वीतिहोत्राः स्वयं जाताः शौण्डिकेयास्तथैव च।
वीतिहोत्रादनन्तोऽभूदनन्ताद् दुर्जयो नृपः।।[11]

भावार्थ

इसी वंश में महान् प्रतापी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन पैदा हुए। इनकी सन्तान जयध्वज राजा के तालजंघ, (पुराणों में लिखा है, ये सौ भाई थे।) तालजंघ के 1. भोज (इन्होंने भोजपुर बसाया) 2. अवन्ति (इन्होंने अवन्तिकापुरी उज्जैन बसाया), 3. वीतिहोत्र (इन्होंने वीतहोत्रपुर बसाया), 4. स्वयंजात और 5. शौण्डिकेय (इन्होंने शौण्डिकेयपरु बसाया) इन पाँच कुलों के नाम से प्रसिद्ध हैहय वंश चले। वीतहोत्र से अनन्त नाम के राजा हुए, अनन्त से दुर्जय राजा हुए।

श्री कार्तवीर्यं सहस्त्रार्जुन एवं श्री रामचन्द्र जी के परमभक्त श्री पवन पुत्र हनुमान के संबंध में श्री कार्त्तवीर्यं सहस्त्रनाम के अन्तर्गत तुलनात्मक विचार पाया जाता है। यथा :–

अंजनो हनुमान्द्वैयः क्षेत्रफलः खलार्दनः।
खंजरो खंजनी खंजा खंजनाशोस्पाकस।।[12]

श्री माहिष्मतीनाथ श्री कार्तवीर्य एवं पवन पुत्र हनुमान जी के बीच भेदभाव मानते हैं, वे प्राणी कष्टमय जीवन बता कर सहस्रों पाप के भागी होते हैं। ऐसा कथन शास्त्रों में वर्णित है–

यथा माहिष्मतीनाथस्तथा वायु सुतस्मृतः।
उभयोरन्तरं नास्ति कृत्वा पापमवाप्नुयात्।।[13]

श्री कार्तवीर्य सहस्रार्जुन की महिमा का गुणगान महोदधि के वृहद मंत्र में किया गया है–

कार्त्तवीर्यार्जुनोधन्वी राजेन्द्रो हैहयेश्वरः।
कार्त्तवीर्यार्जुनोनाम् राजा बाहु सहस्रवान्।
तस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते।।[14]

भगवान् कार्तवीर्य को तान्त्रिक ग्रन्थों में तन्त्र शास्त्र के महान् आचार्य एवं सुर्दशन चक्रावतार कहा गया है। उक्त मत की पुष्टि महाभारत के श्लोक से होती है। यथा :–

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्रवान्।
येन सागर पर्यन्ता धनुषानिर्जिता मही।।[15]

भावार्थ

जिन्होंने अपने सरासन के सहारे सातों समुद्रों से घिरी इस वसुन्धरा को एक ओर से दूसरे छोर तक जीता वह श्री कार्तवीर्यं अर्जुन नाम के विख्यात राजा हुए।

तेनयं पृथ्वी कृतस्मा सप्तद्वीपा सपतना।
सप्तोदधि परिक्षिप्ता क्षात्रेण विधिनाजिता।।[16]

भावार्थ

उन्होंने सातों समुद्रों से घिरी हुई यह समस्त पृथ्वी अपने क्षत्रिय धर्म से विजय किया।

''भृगुकुल तथ पुलस्त्य ऋषि वंशज रावण राक्षस प्रवृत्ति के हो गये थे। महाभारत के शांति पर्व में सहस्त्रार्जुन तथा भृगुओं में जमदग्नि की कामधेनु के अधिकार का घोर युद्ध का वृतान्त मिलता है। भृगुओं के कामधेनु स्वरूप व्यापार तथा कृषि भूमि को सहस्रार्जुन ने अधिग्रहण कर लिया था।''[17] जिसके कारण कटुता पैदा हो गई थी। विष्णुपुराण में रावण जैसे महाबली का सहस्रार्जुन द्वारा परास्त होने का उल्लेख मिलता है। जिसे सहस्रार्जुन ने बंदी बना लिया। रावण के दादा महर्षि पुलस्त्य को इसकी खबर लगी। उन्होंने सहस्रार्जुन से आग्रह करके रावण को छुड़ा लिया। ''भृगुओं के धनोपार्जन के साधन कामधेनु के अधिकार को लेकर घनघोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में सहस्रार्जुन के साढू पुत्र परशुराम को इसकी जानकारी लगी। कई वर्षों तक युद्ध हुआ। अंत में भगवान शंकर के अस्त्रों द्वारा सहस्रार्जुन ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।''[18]

भगवान सहस्रार्जुन की समाधि मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर से 91 किलोमीटर पर खरगौन जिले में महेश्वर नामक स्थान में रानी अहिल्याबाई होल्कर के किले में शिव मंदिरों के बीच आज भी स्थित है। यह वही स्थान है, जिसे प्राचीन काल में महिष्मति नाम से जाना जाता था। इस समाधि पर हिन्दू परम्परानुसार शिवलिंग स्थापित है। ताकि नियमित पूजा होती रहे। इस समाधि पर हजारों वर्षो से तांबे के बने हुए शुद्ध घी के ग्यारह नन्दा दीपक अखण्ड रूप से प्रज्ज्वलित हैं। समाधि मंदिर से लगा हुआ भगवान सहस्रार्जुन का एक भव्य मंदिर भी है। श्री सहस्रार्जुन जयंती के शुभ अवसर पर कार्तिक मेला लगता है। भगवान सहस्रार्जुन को लाल वस्त्र, लाल फूल, लाल टीका तथा घी के दीपक प्रिय हैं।

निष्कर्ष

कार्तवीर्यार्जुन भगवान सहस्रार्जुन जी एक सिद्ध देवता हैं, जिनका शास्त्रों में पूजन का विशेष विधि–विधान का उल्लेख है। ज्योतिष शास्त्र अनुसार ये शुक्र ग्रह के देवता हैं। देश के प्रकाण्ड ज्योतिषि भी इनका मंत्र सिद्ध कर अनुष्ठान कराते हैं। ग्वालियर, नागदा, इंदौर, भोपाल, जबलपुर आदि स्थानों में इनके छोटे–बड़े मंदिर हैं। ग्वालियर दुर्ग में इनका विशाल ऐतिहासिक मंदिर है, जिसमें मूर्ति नहीं है तथा पुरातत्व विभाग के अधीन है। कई स्थानों पर सास–बहु के अपभ्रंश नाम से भी मंदिरों के अवशेष हैं जो इन्हीं के मंदिर थे। इस शोध कार्य के माध्यम से कलाल समाज के आराध्य देव सहस्रबाहु अर्जुन से सम्बन्धित तथ्यात्मक विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन समाज हित में सिद्ध होगा।

अंत टिप्पणी

1. *सर्व कलाल समाज ज्योति–वर्ष 2016, प्रकाशक– माणक मेवाड़ा, पृ.स. 64*
2. *हैयय क्षत्रिय कलचुरि वंश की वैभवगाथा–लेखक– फतहचन्द गुप्ता, पृ.स. 52*
3. *हैययनाथ सहस्रार्जुन महिमा–लेखक–शारदा प्रसाद जायसवाल, जायसवाल प्रकाशन, इलाहबाद, पृ.स. 6*
4. *वही, पृ.स. 6*
5. *वही, पृ.स. 7*
6. *वही, पृ.स. 8*
7. *हिन्दी विश्व कोष, भाग–5, लेखक–नगेन्द्रनाथ बसु, पृ.स. 241*
8. *ऋग्वेद 10/103/3*
9. *हिन्दी विश्व कोष, भाग–5, लेखक–नगेन्द्रनाथ बसु, पृ.स. 247*
10. *पद्मपुराण भाग–5, पर्व–5, श्लोक–2, लेखक–जैनमुनि रविषेणाचार्य*
11. *अग्निपुराण अध्याय–10, श्लोक–275*
12. *श्री कार्तवीर्य वृद्ध उपासनाध्याय, श्लोक–126, लेखक– कृष्णदास खेमराजवेंकटेश्वर, प्रेस बम्बई, पृ.स. 98*
13. *हनुमान वृद्ध उपासना, श्लोक–51, लेखक–कृष्णदास खेमराजवेंकटेश्वर, प्रेस बम्बई, पृ.स. 50*
14. *महोदधिग्रंथ–17वां तरंग*
15. *महाभारत–अश्वमेध पर्व, अध्याय–29, श्लोक–2*
16. *ब्रह्माण्ड पुराण, उपो. 3, अध्याय 69, श्लोक–14*
17. *श्री राजराजेश्वर कार्तवीर्य अर्जुन पुराण–प्रकाशक–ए.के. रॉय एण्ड कम्पनी, जबलपुर, पृ.स. 65*
18. *श्री राजराजेश्वर कार्तवीर्य अर्जुन पुराण–प्रकाशक–ए.के. रॉय एण्ड कम्पनी, जबलपुर, पृ.स. 68*